XX/377

2190

खैर, यह तो सन् २८ की बात सन् २३ में, दीपक के रूप में आ गई थी। श्री० राजगोपालाचारी जी के नेतृत्व में अपरिवर्तन वादियों के बम्बई अ० भा० कांग्रेस कमेटी के प्रस्ताव को न मानने पर जुलाई के प्रथम सप्ताह में नागपुर में अ० भा० कांग्रेस कमेटी की दूसरी बैठक बुलाई गई। राजगोपालाचारी जी ने बम्बई अधिवेशन में नियुक्त कार्य समिति पर अविश्वास प्रकट किया और कार्य समिति को स्तीफा देना पड़ा। उसके स्थान पर नई कार्य समिति चुनी गई। इस कमेटी के सभापति श्री० कोंडा वेंक ट टप्पैया मन्त्री सर्व श्री बाबू राजेन्द्र प्रसाद, गोपाल कृष्ण ऐयर तथा श्री शेरवानी तथा सर्व श्री बरदाराजुल नायडू, श्री राजागोपालाचारी, श्री शफी, श्री जार्ज जोजफ, श्री देश पान्डेय, तथा सरदार बल्लभ भाई पटेल सदस्य चुने गये। कौंसिल प्रवेश के प्रश्न पर अन्तिम फैसला करने के लिये कांग्रेस का विशेष अधिवेशन सितम्बर के प्रथम सप्ताह में बम्बई में बुलाने का निश्चय हुआ। बाद में अगस्त मास मे होने वाली अ० भा० समिति मे अधिवेशन को बम्बई में बुलाने से श्री मती नायडू के साथ, इन्कार कर देने को दिल्ली मे बुलाने का निश्चय किया गया।

मालवीय जी इस राजनीति से बिल्कुल अलग रहे उनके सामने प्रश्न ही दूसरा था, समस्या ही दूसरी थी। दिल्ली के प्रसिद्ध मुस्लिम नेता हजरत मौ० हसन निजामी हिन्दुओं को छल बल व्दारा मुसलमान बनाने की स्कीमें बना रहे थे। उनकी यह स्कीम बहुत ही भयानक थी। इसे यहां बहुत गुप्त रखा गया था किन्तु अन्य मुस्लिम देशों में उसका प्रचार खूब किया गया था। अफ्रीका के किन्ही सज्जन ने इसकी एक प्रति लाहौर के प्रसिद्ध उर्दू दैनिक पत्र 'प्रताप' सम्पादक के पास भेज दिया और इस तरह उसका भंडा फोड़ हुआ। देश में हालत यह थी कि अजमेर के हिन्दू अजमेर छोड़ने की बात सोच रहे थे। : अभ्युदय २८ जुलाई २३ : मालवीय जी के लिये तत्काल व्याख्यान वाचस्पति हिन्दू संगठन का अपने हाथों में कार्य लेना आवश्यक हो गया। २२... .२३ अगस्त को काशी जी में हिन्दू महासभा का वह महत्व पूर्ण अधिवेशन हुआ जिसने हिन्दू जाति की काया ही पलट दी। यद्यपि प्रान्त के अनेक कांग्रेस नेताओं ने काशी के सुप्रसिद्ध हिन्दी 'आज' के नेतृत्व से महा सभा का जोरदार विरोध किया, और बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी जैसे कुछ अपरिवर्तन वादी नेताओं को छोड़कर साधारण तया कांग्रेस नेता उससे अलग ही रहे तथापि

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA
राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

हिन्दू महासभा का अधिवेशन जो काशी में हुआ था हिन्दू जाति के इतिहास में चिरस्मरणीय तथा ऐतिहासिक रहेगा । सनातन धर्म नेता स्वामी दयानन्द जी, पं० दीन दयालु शर्मा, पं० अखिला नन्द शास्त्री, पं० नेकी राम शर्मा, आर्य समाजी नेता स्वामी श्रद्धानन्द जी, श्री नारायण स्वामी जी, स्वामी आत्म स्वरूप जी, कुंवर चांदकरण जी, सिख नेता श्री० इन्द्र सिंह, अछूत नेता चौधरी बिहारी लाल, नर्म दली नेता श्री० सी० वाई० चिन्तामणि, राजा सरसमपाल सिंह, डाक्टर भगवान दास, डाक्टर गोकुल चन्द नारंग, सेठ जुगुल किशोर प्रिंसिपल ध्रुव, महा महोपाध्याय, पं० प्रमथ नाथ भट्टाचार्य, श्री सुब्रमण्यम शास्त्री, इत्यादि तो इस अधिवेशन में शामिल हुये ही सबसे महत्व पूर्ण उपस्थिति थी प्रसिद्ध बौद्ध नेता तथा महा बोधी सोसाइटी के जनक अनागरिक धर्म पाल की जिन्होने इस अधिवेशन में घोषणा की । कि हम भी हिन्दू हैं और संसार के बुद्ध हिन्दू महासभा के साथ है हम बौद्ध विशाल हिन्दू धर्म के वट वृक्ष की ही एक शाखा है और अपने को हिन्दू ही मानते है । संस्कृत के प्रसिद्ध पारसी विद्वान बम्बई के श्री० जी० के० नारी मैन ने अपने संस्मरण में लिखा हैं :

" And when I saw the otherday the epithet of Mahamana applied to him, The appelleative indicative of a personage of elevated spirit, I thought that a more appropriate disignation would be hard to devise. One of my happiest days was passed in Banaras where Pandit Malaviya had invited me some years ago to the assembly of pandits, freely to exchange views, the medium of expression being sanskrit, It was here in passing, that one could see how sanskrit is still a living idiom among the cultured Hindus and not necessarily among the ultra reactionary school. And here he allowed me to express my then heretic beliefs and my suggestion that Hindus should go abroad and mix with non-Hindus just as their ancestors had done, braving the hardships of journey and voyage to the near and Far East and farther away. And he supported me. "

मुस्लिम है हम वतन है सारा जहां हमारा का यह एक प्रकार सेजवाब था जो हिन्दुओं द्वारा काशी हिन्दू महा सभा में पहली बार दिया गया ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

महा सभा का कार्य प्रारंभ पं० अखिला नन्द शास्त्री के संस्कृत ......मंगल चरण ,तथा दिलीप कुमार राय और ,प्रोफेसर खुशाल कर के मधुर भजनों व्दारा हुआ । स्वागत कारणी समति के सभापति राजा मोहीं चन्दवी के स्वागत ......भाषण के बाद व्याख्यान वाचस्पति पं० दीन दयालु जी शर्मा ने सभापति पद के लिये पूज्य मालवीय जी के नाम का प्रस्ताव करते हुये कहा " मालवीय जी जन्म से हिन्दू नेता है । वे हिन्दू महा सभा के तीन बार सभापति हो चुके है और आज चौथी बार भी ,यद्यपि उन्होंने ही यह सभा बुलाई है तथापि ,वही इस महासभा का सभापतित्व करने के योग्य है । उनके नाम में मोहनी शक्ति है । स्वामी श्रद्धानन्द जी ने प्रस्ताव का समर्थन करते हुये कहा कि " परमेश्वर ने ऐसी लहर चलाई है कि जिससे यह जाति उठ खड़ी हुई है । धर्म एक है ,सम्प्रदाय अनेकों सम्प्रदायिक झगड़ों में पड़कर धर्म की एकता को कोई नही देखता । मालवीय जी देखते है और यह एक गुण उनमें ऐसा है जो और किसी में दिखलाई नही देता । बड़ी से बड़ी निराशा में भी वह आशावन रहते है । मैं परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि मालवीय जी दो दिन इस सभा का शासन ऐसा करे कि यह हिन्दू जाति दो दिनों बाद संगठित होकर उठे । "अनागरिक धर्मपाल , श्री० सी० वाई चिन्तामणि ,मद्रास के श्री० सुब्रह्मण्यम शास्त्री ,बड़ौदा के पंडित अमृत राम शास्त्री ,बंगाल के पंडित बैजनाथ चौबे ,तथा महामहोपाध्याय पं० गुरु चरणतीर्थ,मारवाड़ के सेठ जुगुल किशोर बिरला ,अजमेर के कुंवर चांदकरण शारदा,पंजाब के डा० र गोकुल चन्द नारंग ,और सरदार इन्द्र सिंह इत्यादि के समर्थन के बाद मालवीय जी ने ढाई घन्टे तक धारा प्रवाह वह ऐतिहासिक भाषण दिया जिसने वास्तव में समस्त हिन्दू जाति को सजग और सचेत कर निद्रा से उठाकर अपने पैरों पर खड़ा कर दिया । अछूत और शुद्धि जैसे मसले पर भी वह ऐसा बोले कि काशी की उपस्थित पंडित मंडली भी विरोधन कर सकी । अपने भाषण का प्रारंभ उन्होंने :

यं शैवा: समुपासते शिव इति ,ब्रह्मेति वे दान्तिनो ।
बौद्धा: बुद्ध इति,प्रमाण पटव: कर्तेति नैय्यायिका: ।
अह निन्त्यथ जैन शासन रता,कर्मेन्ति मीमांसका: ।
सोहयं नो विदधातु वांछित फलं त्रैलोक्य नाथो हरि: ।।

श्लोक से किया था वैदिक और बौद्ध धर्म की एकता पर बोलते हुये उन्होंने कहा था : "वैदिक धर्म के सिद्धान्तो में कभी भेद नही बाधी गई

राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

वेष्टाष्ट के पूर्व से आज तक 'यथा पूर्वम् कल्पयत्' वैसे ही हो है और रहेंगे। कुछ लोगों का विश्वास है कि बुद्ध देव के समय में वेद का प्रचार नहीं था। यह भ्रम है। बुद्ध जी हमारे अवतार हैं। यद्यपि पीछे उनके धर्म का प्रचार यहाँ विशेष रूप से नहीं रहा तो भी हिन्दू जाति उन्हें भूली नहीं। याद रक्खो कि वह हमारे थे और हैं। हिमालय से लेकर कन्या कुमारी तक सर्वत्र ब्राम्हण अपने संकल्प में 'बुद्धावतारे' अवश्य कहते हैं। बड़ा मानकर ही शंकराचार्य ने बुद्ध को 'यती नारच क्रवर्ती' कहा।

वेद के कुछ सिद्धान्तों को लेकर ही भगवान बुद्ध ने अपना धर्म चलाया। यह बौद्ध धर्म हमारे प्राचीन वैदिक धर्म का एक अंग है।'

यह भाषण ऐसा है कि इसे प्रत्येक हिन्दू को पढना और मनन करना चाहिये। दृष्टि से यह अभूतपूर्व था और उसने वास्तव में हिन्दू जाति को नवजीवन प्रदान किया। उन्होंने साफ साफ कहा :

'सन् १९०६ में जब पूर्वीय बंगाल में बंग भंग हुआ तो कुछ अंग्रेज हिन्दू मुसलमानों को लड़ाना चाहते हैं। कहीं कहीं मुसलमान हिन्दुओं से इन स्थानों में अधिक हैं। कुछ हमारे विद्रोही मुसलमान उसमें शरीक हो गये। भले आदमियों ने नहीं बल्कि नंगों और लुच्चों ने बहकावे में आकर हिन्दुओं पर चोट की। हमारी कितनी ही बहू बेटियों को अपनी लाज की रक्षा के लिये तालाबों में डूबकर अपना सतीत्व बचाना पड़ा :शनैः शनैः हम लोगों ने यह भी सह लिया। हम लहू का घूट पीकर रह गये। इसके उपरान्त सन् १९१४ में जब लड़ाई छिड़ी तो सीमा प्रान्त में कुछ गुंडों ने...मैं भले मुसलमानों को नहीं कहता..कुछ लुच्चों ने एक एक हिन्दू के घर पर निशान लगाकर उनके घरों को लूटा। देश भक्त हिन्दू नेताओं ने फिर विचार कर कहा कि मुसलमानों से बैर न करो,सहजाओ, बर्दाश्त करजाओ नहीं तो बड़ा अनर्थ होगा,बड़ी हानि होगी,देश को धक्का पहुंचेगा। इसके बाद महात्मा गांधी के उपदेश से खिलाफत के मामले में हिन्दू नेताओं ने कह दिया कि उनके धर्म पर विपत्ति आई है इसलिये मुसलमानों का साथ देना चाहिये। हम लोग दासता के शत्रु हैं और न्याय युक्त प्रबंध के पक्षपाती हैं। हमने समझा कि तुर्की में मुसलमानों का राज्य होना चाहिये। जब एक भाई पर आपत्ति हो तो दूसरा खड़ा रहे। यह नहीहोना चाहिए। जो समझदार मुसलमान हैं वे हिन्दुओं की इस सहायता को मानते हैं और इसलिये वे हिन्दुओं से ....

राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

लड़ाई नही करना चाहते किन्तु कुछ लोग ऐसे छोटे भाव के है ,क्षुद्र है ,तथा गिरे हुये आचरण के है कि उन्हे लड़ना ही अच्छा लगता है थोड़े ही ऐसे है ,जब ऐसे नही । : हंसी : सन् १६२० मैं मुसलमानो ने जो अत्याचार हिन्दुओ पर किये उसके कारण समझदार मुसलमानो और हिन्दुओ को बड़ी वेदना हुई । हम ऐसे कमजोर हो गये है कि मुसलमान जहां चाहते है वही दबा बैठते है । पंजाब के मुजफ्फरगढ मैं तो संख्या कम थी पर वहां भी मुसलमानो ने पीटा । इसके कारण देश मैं बड़ा दु:ख हुआ । वे समझने से मान गये । परन्तु यह ठीक नही है कि हमारे मन्दिर तोड़ दिये जाये ,बहू बेटियों पर अत्याचार हो और हमारी सहन शीलता बनी ही रहे ।

महात्मा गांधी के सत्याग्रह की घोषणा के पहले सरकार कुछ सुनती थी ,कुछ दबाव मानती थी ,कुछ गौरव मानती थी । परन्तु जब से उन्होने कहा कि अत्याचार सह लो ,अहिंसा व्रत का पालन करो ,हाथ न उठाओ और पूरे अहिंसा वादी बन जाओ ,जबसे इस अहिंसा घोष की पुकार हुई तबसे अंग्रेज सरकार का दिमाग बदल गया । अंग्रेजी अफसरो का दिल बदल गया ,उनके भाव बदल गये और उन्होने खूब अत्याचार किये । उनपर कोई दबाव नही रहा ,उनको कोई भय नही रहा । हमारी राजनैतिक अवस्था कितनी शोचनीय हो गई है । आपको अपनी स्थिति का ठीक ज्ञान प्राप्त करके अपनी रक्षा के उपाय सोचने चाहिये । सच मानो ,जब तक संकोच के साथ आप हिचकोगे तब तक काम नही चलेगा । कायरता का त्याग करना होगा । अत्याचार को सहते रहने से काम नही चलेगा ।

जो उपद्रव दस वर्ष पूर्व ,तुर्की की संधि से पहले सुनने मे नही आते थे वे अब रोज रोज हो रहे है । अवस्था यह है कि पांच वर्ष पहले हम जिस निर्भयता से रहते थे आज वह नही है । स्त्रियां जिस निर्भयता से बाहर निकलती थी आज वह स्वतंत्रता नही दिखाई देती । अमृतसर मैं आज स्त्रियो को यह कहा जाता है कि होशियार होकर निकले । कोई उपद्रव न हो जाय । मेलो मैं ,उत्सवो मैं ,त्योहारो मैं , उन पर उनका बाहर निकलना मुश्किल हो रहा है । यह दुरवस्था है । : शर्म ...शर्म : जगन्नाथ जी का

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA
राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

मन्दिर तोड़ डाला गया है। अजमेर का हाल आपने सुना ही है। वहां एक मन्दिर में आग लगा दी गई। अब ऐसी दशा में हम लोगों का ,जो उनसे प्रेम करते है जो हिन्दू है अथवा आर्य हैं , उनके प्रति हमारा कुछ सामुदायिक कर्तव्य है या नही। हमको ऐसी सर्व शक्ति बढ़ानी चाहिये कि सरकार पर भी असर पड़े और मुसलमानों पर भी :

जिस देश में क्षत्रिय जाति की सजी हुई सेना रहती थी जहां धर्म के उपदेष्टा ज्ञानी ब्राम्हण थे ,उस जाति का ऐसा पतन हो ,वह ऐसी गिरजाये कि मुट्ठी भर आदमी विदेश से आकर उन पर शासन करें और उनका अपमान करें : शर्म....शर्म : और मुसलमानों में से किसी की हिम्मत हो कि अबलाओं और मन्दिरों पर हमला करें। यह डूब मरने की बात है। या तो आप मर जाये या ऐसा कर दे कि फिर ऐसा न होने पावे। अबला या पुरूष की रक्षा बिना शक्ति के नही होती। शक्ति पैदा करो।

आप गली गली हिन्दू मन्दिरों की रक्षा नही कर सकते। आपको हिन्दू जाति की शक्ति को जगाना है कि जिससे कोई आप पर हाथ न उठावे ,उस शक्ति को जगाना है कि जिससे आप पृथ्वी पर ऊंचा माथा करके इज्जत के साथ चल सके। इसलिये हिन्दू संगठन की अवश्यकता है।

जैसे प्रेम से कांग्रेस मे जाते है उसी प्रेम से हिन्दू महासभा मे एकत्र होकर विचार करें कि हिन्दू जाति का गौरव हिन्दू जाति की प्रतिष्ठा किस प्रकार स्थापित कर सकेंगे। इस समय यही काम अपके सामने है।

प्रीति बराबर वालों में होती है। कमजोर और शहजोर में प्रीति नही होती और यह कहते हमारे हृदय को दु:ख होता है ,वेदना होती है कि इस समय हमारे हिन्दू भाई समाज की रक्षा करने के लिये कमजोर हो गये है। हमारे अपमान का कारण मुसलमान नही है। हमारी दुर्बलता ही इसका कारण है। हमको अपनी थदबलता दूर करनी चाहिये। जिस दिन मुसलमानों को... सबको नही कहता..हजारों शरीफ अच्छे और भले मानुस है , खराब तबियत के मुसलमानों को यह मालूम होगा कि उनको एक प्रहार के बदले हिन्दू दो देंगे उस दिन मेल पक्का होगा। : हंसी : मैं धर्म से , शपथ पूर्वक , गंगा के किनारे विश्वनाथ पुरी में इस सभा के सामने कहता

हूं कि उनको एक पुहार मिल गया है कि मेरे ह्रदय में चावल भरभाव नही कि किसी को चोट पहुंचाऊ । चाहते हो तो परमात्मा हमें दण्ड दे । पर यह मैं चाहता हूं कि मैं मर जाऊं मेरे बन्धु मर जाये ,यदि हम इज्जत ,मान और धर्म की रक्षा नही कर सकते ।

: कातलत्वनि :

" यहां पारसी ,ईसाई ,यहूदी सब है । आप सबसे मिलकर प्रेम रखते हुये ऐसा काम करें जिससे दुर्बलता मिट जाये । इसके लिये मुसलमान जिम्मेदार नही हैं । हम और आप हैं । जातीय धर्म को सामने रखकर हिन्दू मुसलमान भाई जिन कामों मे मिलकर काम कर सकते है करें । शहर नगर की रक्षा में नागरिक दलों मे जाय ,सब मिलकर एक साथ काम करें । वहां भेदभाव नही आना चाहिये । मुसलमानों के साथ यावज्जीवन मिल कर काम करें , शर्म न खाये । जब कहीं हिन्दूओं द्वारा अत्याचार होते मैने देखा है तो मुझे उसका दु:ख हुआ है । ऐसा करना ठीक नही है । बिहार मे जो कुछ हुआ उससे मुझे बड़ा सन्ताप हुआ । कटार पुर में जो अत्याचार हुआ उससे बड़ा दु:ख है । वह ठीक नही था । यदि कोई आदमी निर्दोष है और कोई हिन्दू उस पर अत्याचार करता है और आप मना नही करते तो आप बुरे हो । यदि मुसलमान को अत्याचार करने से नही रोकते तो यह कायर पन है ।

" यह कभी मत भूलो कि हमारा देश भारतवर्ष है । इसमें भिन्न भिन्न धर्म के लोग बसते है । इस देश का भला इसी में है कि हम सबमें परस्पर मेल रहे । यदि यह याद रहा तो ठीक है नही तो हिन्दू सभा निष्फल हो जायेगी । यह यदि याद रहा तो इससे स्वराज्य पाने में भारी मदद मिलेगी । याद रक्खो कि यदि गिरजे या मस्जिद की तरफ हमारी नजर उठे तो आदर की नजर उठे । याद रक्खो बलवान आदा सहन किया करता है । कमजोर को जल्दी गुस्सा आता है । यदि कुछ भाई मन्दिरों पर भी हाथ उठाये तो आप उन पर उतना ही हाथ उठाओ जितना उनकी दुष्टता को दबा सके । एक अपनी विवाहिता स्त्री के सिवा अन्य सबको ,चाहे वे मुसलमान हो चाहे ईसाई , उन्हे

राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

अपनी माता के समान समझो । कहीं ऐसा न हो कि किसी को यह कहने का मौका मिल जाय कि हिन्दू सन्तान अपने धर्म को खो बैठा । अपना आचरण ऐसा बनाओ कि किसी मुसलमान या किसी ईसाई को बेजा शिकायत न हो । अपना लक्ष्य र यही है

" सर्वेच सुखनि: सन्तु सर्वे सन्तु निरामया :
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:खमान्पुयात् ।। "

काशी हिन्दू महासभा में एक प्रस्ताव यह भी पास हुआ था कि " इस महासभा को यह समाचार पाकर अत्यन्त हर्ष हुआ है कि सिंहल व्दीप ,ब्रम्हदेश ,जापान ,चीन ,श्याम आदि देशों में बसने वाले हमारे बौद्ध मतानुयायी भाइयों में भगवान बुद्ध देव का ज्ञान और प्रथम उपदेश के प्राय स्थान गया और काशी की यात्रा के लिये आने की अभिलाषा दिन प्रति दिन बढ रही है । यह महा सभा इन सब भाइयों का ह्रदय से अभिनन्दन करती है और उनको सूचना देती है कि इस देश के निवासी उन यात्रियों का स्वागत और सम्मान करना अपना धर्म समझते है और उसमें अपना गौरव मानेंगे ।

इस प्रस्ताव के लिये बौद्ध प्रतिनिधि ,अनागरिक धम्र पाल जी ने बौद्धों की ओर से हिन्दुओं और उनकी महा सभा को धन्यवाद दिया और उन देशों की बौद्ध जनता की ओर से कृतज्ञता प्रकट की ।

और यहीं से हिन्दू सगंठन आन्दोलन समुन्द्र के वेग की तरह आगे बढ चला । मुसलमान ऐतिहासज्ञ श्री० के० एफ० दुर्रानी ने अपनी पुस्तक " मीनिंग आफ पाकिस्तान " में लिखा है :

" After the ri-orgamisation of the Hindu Mahasabha in 1923 a three fold programme was launched for the realisation of its aim of establishing a Hindu Raj . Though the Muslim are in minority they have always enjoyed a prestige for their military prowess, and Hindus, in spite of their huge numbers, have been but sheep before them. The Hindu Mahasabha when it adopted its new ideology in 1923, struck upon a novel plan for creating the spirit of aggressiveness among the Hindus and killing the fear that the name

of the Mussalman inspired in the Hindus breast...... So long as the Hindu retained a whole some fear of the Musalman, there could be no riots. The riots were the course of training by which the Hindus were to be militarised. Pandit Malaviya was the person chiefly responsible for organising them as reference to his itineraries published in newspapers of those years will show. Pandit malaviyas visit to a town being followed a few weeks later by a bloody riot in that town. When Mr. Gandhi came out of jail in Feb. 1924 he found the country in the grip of pandit malaviyas gangaster politics but had not the courage to face the situation......The mahatma did nothing to quench the fires and left the evil genius of Malaviya to direct the poletical life of Hindu India for five long years (1923-27). Mr. Gandhi kept mum and did not riase his little finger to check the gory drama that was being played all over India by Pt. Malaviya, Lala Lajpat Rai and other Mahasabhaites, and when he did emerge from retirement towards the close of 1928, he did so not as an all India leader of both Hindus and the Muslims as he had been before his incarciration and retirement but as a leader of the Hindu Commdnity alone. With the Mahatma's conversion to the Malaviyan ideology of Hindu nationalism and Hindu Raj, P-andit malaviya himself left the stage and gradually sank back into private life. From 1924to 1928 was his (Gandhiji's period of incumbation at the end of which he emerged as a leader of the Hindu community pure and simple and launched his civil disobedience movement from which the muslims as a community held completely aloof.

निश्चय ही यह सारा वर्णन मुस्लिम साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से लिखा गया है , एक बगा तथा असत्यपूर्ण भी है किन्तु फिर भी इतना तो सत्य है कि हिन्दुओं के दिल से मुसलमान गुंडों का आतंक ....

राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

जो छाया हुआ था वह बहुत कुछ इस बीच में दूर हो गया , हिन्दू जाति अपनी कायरता को छोड़कर अपने पैरों पर उठ खड़ी हुई और स्वराज्य दल के अन्य नेताओं के ठीक विपरीत जेल से आने पर महात्मा गांधी ने हिन्दू महा सभा आन्दोलन का न केवल विरोध ही नहीं किया बल्कि १९२५ में तो उन्होंने " यंग इंडिया " में यहां तक लिखा कि :

" अब मस्जिदों के सामने बाजा बजाने का सवाल रहा । मैंने यह सुना है कि मुसलमानों की यह मांग है कि मस्जिदों के सामने किसी भी समय धीरे या जोर से कैसा भी बाजा न बजाया जाय । उनकी यह भी मांग है कि मस्जिदों के पास जो मन्दिर हो उनमें नमाज के वक्त आरती भी बन्द कर देनी चाहिये । मैंने यह भी सुना है कि कलकत्ते में प्रातः काल के समय कुछ लड़के राम नाम रटते हुये मस्जिद के पास से गुजर रहे थे उन्हें रोका गया ।

तो अब क्या किया जाय । ऐसे मामलों में अदालतों पर आधार रखना सड़े बांस पर आधार रखने के बराबर है । .... जब तक मनुष्य कमजोर बने रहेंगे तब तक उनकी निर्बलता से लाभ उठाने वाले भी कोई न कोई अवश्य निकल पड़ेंगे । इसलिये अब आत्म रक्षा के लिये संगठन करना ही एकमात्र उपाय है ऐसे मामलों में जिनका इससे संबंध है वे यदि शान्ति प्रतिकार करने में असमर्थ हों तो वे अपनी रक्षा के लिये कैसे भी हिंसात्मक साधनों का उपयोग करें न करें मैं उसे ठीक नहीं समझूंगा । "

महात्मा गांधी ने अन्य स्वराज्य दल के नेताओं की तरह मालवीय जी को गालियां नहीं दीं बल्कि बराबर उनकी प्रशंसा करते रहे और इन दोनों महान नेताओं को आपस में लड़ाने के विरोधियों के सारे प्रयत्न व्यर्थ गये ।

बात १९२४ के अन्त की है । अमृतसर में होने वाली प्रान्तीय खिलाफत कान्फ्रेंस के अधिवेशन में गांधी जी भी सम्मिलित हुये थे । सभापति मौलाना ज़फर अली खां , सम्पादक " जमीन्दार " ने अपने भाषण में कहा कि " जबसे महात्मा गांधी जी कैद हुये तो बीसयों स्थानों पर दंगे हुये और हिन्दुओं की लीडरी उन लोगों के हाथों में आ गई जो महात्मा जी के विरुद्ध थे ।

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA
राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

.... अन्त में हिन्दुओं के नेता मालवीय जी हुये । इस दल के लोग मुसलमानों के उचित अधिकार भी छीन लेना चाहते हैं " इत्यादि और गांधी जी की बड़ी प्रशंसा तथा मालवीय जी की कड़ी निन्दा की । महात्मा जी ने अपने भाषण मे उत्तर देते हुये कहा : " मुझे सभापति जी से एक शिकायत है । आपने मुझको तो बड़ा बना दिया पर औरों की शिकायत की है । मुझे इसमें बड़ा खतरा नजर आता है । मेरा ह्रदय नहीं मानता कि मालवीय जी मुसलमानों के दुश्मन है । पर उनकी शिकायत करके क्या लाभ होगा । आप मालवीय जी की शिकायत करके उनसे काम नहीं ले सकते मुझसे तो आप आसानी से काम ले सकते है पर मालवीय जी से नहीं । क्यों कि मुझसे ज्यादा उनका हिन्दुओं पर असर है । मुझे तो लोग कहते है कि मैं मुसलमान हो गया हूं । जिस तरह हकीम अजमल खां के बिना हिन्दू काम नहीं कर सकते उसी तरह मालवीय जी बिना आप काम नहीं कर सकते । "

इससे पहले भी १ जून सन् २४ की "यंग इंडिया" में वह लिख चुके थे :

" मुझे पंडित मालवीय के बारे में चेतावनी दी गई है । उन पर यह इल्जाम है कि उनकी बाते बड़ी गहरी छुपी हुई होती है । कहा जाता है कि वे मुसलमानों के शुभ चिन्तक नहीं हैं , यहां तक कि वे मेरे पद से ईर्ष्या करने वाले बताये जाते है । जब से १६१५ में हिन्दुस्तान आया तबसे मेरा उनके साथ बहुत समागम है और मैं उन्हे अच्छी तरह से जानता हूं । मेरा उनके साथ गहरा पचिरय रहता है । उन्हे मैं हिन्दू संसार के श्रेष्ठ व्यक्तियों में मानता हूं कट्टर और पुराने ख्यालात के होते हुये भी बड़े उदार विचार रखते है । वे मुसलमानों के दुश्मन नहीं है । उनका किसी से ईर्ष्या से रखना असंभव है । उनकी उदारता ऐसी है कि उसमें उनके दुश्मनों के लिये भी जगह है । उन्हे कभी शासन की चाह नहीं रही और जो शासन आज उनके पास है वह उनकी मातृ भूमि की आज तक की लम्बी और अखंड सेवा का फल है । ऐसी सेवा का दावा हममें से बहुत कम लोग कर सकते है । उनकी और मेरी विशेषता अलग अलग है

लेकिन हम दोनों एक दूसरे को बड़े सगे भाई सा प्यार करते हैं। मेरे और उनके बीच अभी जरा सा भी बिगाड़ नहीं हुआ। हमारे रास्ते जुदे जुदे है इसलिये हमारे उनके बीच स्पर्धा तथा द्वेष का सवाल पैदा हो ही नहीं सकता।'

स्वभावतया : विरोधी गण अपनी अकृत कार्यता पर झुंझला गये और मैं गांधी जी को मालवीय जी का शिष्य घोषित करने लगे। मुसलमान और स्वराजी नेता ही ऐसा समझते रहे हों सो बात नहीं। कट्टर पंथी हिन्दू भी ऐसा ही समझते थे। रवदा जेल में जब महात्मा जी ने अछूतों के उद्धार का कार्य अपने हाथों मे ले लिया और उसे जोरों के साथ चलाने लगे तब अनुदार पंथी पंडितों ने भी यही कहा था। महादेव भाई देसाई अपनी डायरी के तीसरे भाग में पृष्ठ ६६ पर लिखते है : ' बम्बई वाले सनातनी कहते है : आनन्द शंकर : बापू भाई ध्रुव : और मालवीय जी गांधी के गुरू बन गये। इस आलोचना को लेकर बापू ने आनन्द शंकर को दिल्लगी में लिखा :
' आपकी तो मुझे जरूरत है ही, अब ज्यादा रहेगी, क्योंकि आपको और मालवीय जी को मेरे गुरू का पद दे दिया है। इसलिये आपको उसे शोभायमान करना ही पड़ेगा।'

पर प्रयाग के महाकवि अकबर तो इससे बहुत पहले, सितम्बर सन् १६२१ में उनका स्वर्गवास हो गया था, लिख गये थे : ' गांधी मालवी है गो एक दिल,
इख्तलाफात कुछ हुये जाहिर।
एक ही नाप के है दोनों सिरे,
गाव दुम हो के रह गये आखिर।।'

पर कोई इसे न समझ सका तो यह दोष किसका कहा जाय। उसका या मालवीय जी और गांधी जी को।

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA
राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

अधिवेशन के बाद ही जापान में एक बहुत बड़ा भूडोल आया जिससे जापान की अपार धन जन हानि हुई। टोकियो और याकोहामा बिल्कुल नष्ट हो गये। पूज्य मालवीय जी ने हिन्दू महासभा के सभापति की हैसियत से देश वासियों के नाम जापानियों की सहायतार्थ एक अपील निकाली और यहाँ से काफी सहायता भिजवाई। इसी बीच में कवीन्द्र रवीन्द्र नाथ टैगोर का भी एक बयान पत्रों में प्रकाशित हुआ जिसमें उन्होंने खुले शब्दों में हिन्दू संगठन आन्दोलन का समर्थन किया। उन्होंने कहा "जब तक हम देश में हिन्दू मुस्लिम समस्या का कोई स्थाई और उपयोगी हल न निकाल पायेंगे तब तक स्वराज्य का संकल्प केवल स्वप्न ही बना रहेगा। मुसलमान शक्तिशाली है और वे यह जानते है कि हिन्दू कमजोर है। मुझे यह विश्वास नहीं होता कि मुसलमान अपनी उदारता से हिन्दुओं के साथ स्थाई मेल करेंगे। हिन्दू आज इतने निर्बल है कि वे मुसलमानों की दया पर जी रहे हैं। दोनों की एकता में एक और अड़चन यह है कि मुसलमान इस देश को सीमाबद्ध रूप से अपनी जन्म भूमि नहीं मानते। मैंने मुसलमान नेताओं से साफ साफ पूछा है कि अगर अफगानिस्तान या अन्य कोई बाहरी मुसलमान राष्ट्र भारत पर आक्रमण करे तो क्या आप हिन्दुओं के साथ उनसे लड़ेंगे। इसके उत्तर में उन्होंने मुझसे जो कुछ कहा है वह जरा भी आशा जनक नहीं है।

हिन्दू महासभा के सबंध में आपने कहा कि "राजनैतिक आन्दोलन से हम इस आन्दोलन को अधिक प्रयोजनीय समझते है। यदि हिन्दू जीना चाहते है और मनुष्य समाज मे पतित अवस्था में बहुत दिन नहीं रहना चाहते तो उन्हें संघ बद्ध होना ही पड़ेगा।

यह पूछे जाने पर कि हिन्दुओं के संगठन होने को क्या मुसलमान सन्देश की दृष्टि से नहीं देखेंगे और इससे हिन्दू मुसलमानों की फूट का एक और कारण न बढ़ेगा, कवीन्द्र रवीन्द्र ने कहा : सन्देह वह अवश्य करेंगे किन्तु क्या किया जाय। जो स्वतत्रंता मुसलमानों को मिली हुई है उसका उपयोग हम भी कर सकते है। हमने जब उन्हें स्वाधीनता दे रक्खी है तो वे वही स्वतत्रंता हमें क्यों न दें और हमारी संघ बद्ध होने की चेष्टा में क्यों बाधा डालें।

मलकाना राजपूतों की शुद्धि के सबंध में आपने कहा कि मैं किसी तरह नहीं समझ सकता कि मुसलमान जिस स्वाधीनता का दावा

राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

अपने लिये करते हैं वही स्वाधीनता दूसरों को देने में नाराज होते हैं ।
: अभ्युदय ७ सितम्बर १९२३ :

सुदूर पूर्वीय देशों जैसे चीन, जापान, श्याम, सुमात्रा आदि बौद्ध देशों के बौद्ध लोगों ने यह हार्दिक इच्छा प्रकट की कि पुराने समय में हिन्दुओं और बौद्धों के बीच जो भ्रातृभाव का धार्मिक सबंध था वह फिर से दृढ हो और इस विचार से इन देशों ने कवीन्द्र रवीन्द्र को अपने २ यहां बुलाने के लिये निमंत्रण भेजा । चीन की ओर से निमंत्रण वहां की सरकार ने ही भेजा था । कवीन्द्र दिसम्बर १९२३ में काशी आये पूज्य मालवीय जी से अपनी इस यात्रा के सबंध में विचार विनिमय करने । और मार्च १९२४ में कवीन्द्र ने यह महत्व पूर्ण यात्रा की भी । सभी देशों में उनका अभूत पूर्व स्वागत हुआ । फलस्वरूप सुदूर पूर्वीय देशों के बहुत से बौद्ध छात्र शान्ति निकेतन में पढ़ने के लिये आये और इस प्रकार हिन्दू बौद्ध एकता को एक नया बल मिला ।

आगे चलकर प्रसिद्ध क्रान्तिकारी नेता स्वर्गीय रास बिहारी बसु बोस ने टोकियो में हिन्दू महा सभा की एक शाखा भी स्थापित की और स्वयं उसके सभापति बने ।

सन् १९२६ में जापान के प्रसिद्ध नगर नागासाकी में उन्होंने एक एशियाटिक सम्मेलन बुलाया जो अत्यन्त महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक था । इस सम्मेलन की कार्यवाही परिशिष्ट में दी जा रही है ।

हिन्दू महासभा को विदेशों में पड़े हुये अन्य क्रान्ति कारियों जैसे श्री तारक नाथ दास तथा लाला हरदयाल का समर्थन भी प्राप्त हुआ और देश में भाई परमानन्द तथा बैरिस्टर विनायक दामोदर सावरकर तो बाद में हिन्दू महासभा के सर्वे सर्वा ही बने ।

अप्रैल १९३५ में कानपुर में होने वाले हिन्दू महासभा के अधिवेशन का सभापतित्व किया था बर्मा के प्रसिद्ध बौद्ध नेता भिक्षु उत्तम ने उन्होंने अपने भाषण में कहा था : "मुझे हिन्दू महासभा का सभापति चुनकर यह सिद्ध कर दिया गया है कि बर्मा के एक करोड़ बौद्ध हिन्दू समाज के ही एक अंग हैं । अपने इस भाषण में उन्होंने उस निमंत्रण पत्र की भी चर्चा की जो प्रशान्त: पैसफिक: सागर की जातियों की कान्फ्रेंस ने अ० भा० हिन्दू महासभा को भेजा था । इस निमंत्रण पत्र में लिखा था कि प्रशान्त सागर की जातियों की कान्फ्रेंस का दूसरा वार्षिक अधिवेशन जापान में होगा और हिन्दू महासभा अपने प्रतिनिधि उस कान्फ्रेंस में अवश्य भेजे । इससे सुदूर पूर्व की बौद्ध जातियों और हिन्दुओं में मैत्री भाव पैदा होगा और अतीत काल से जो सम्बन्ध भारत, बर्मा, चीन, जापान में चला आता है वह फिर स्थापित हो जायेगा और ऐसा होने से पूर्वी जातियों का कल्याण

और श्री० रास बिहारी बोस के नेतृत्व में जापान तथा अन्य सुदूर पूर्वीय देशों ने हमारी स्वतंत्रता प्राप्ति के आन्दोलन में जो सहायता पहुंचाई है वह अभी कल की बात है और हम सब जानते हैं।

सन् १९४२ के आन्दोलन के समय में आजाद हिन्द रेडियो पर से हिन्दू विश्व विद्यालय के छात्रों के नाम सन्देश प्रसारित करते हुये नेता जी सुभाष चन्द्र बोस ने ठीक ही कहा था कि :

" बढ़े चलो, बाहदुरो बढ़े चलो। हिन्दू विश्व विद्यालय के छात्रों। यही अवसर है कि जब तुम मालवीय जी के गुरु ऋण से मुक्त हो सकोगे। मैं शीघ्र ही आ रहा हूं। वहां हम दोनों मिलकर दिल्ली के लाल किले पर स्वतंत्र भारत का तिरंगा फहरा, जिसे सन् १८८६ की कलकत्ता कांग्रेस से लेकर आज तक मालवीय जी महाराज लहराते रहे हैं, गाड़ेंगे और तभी स्वतंत्र भारत मालवीय जी के स्वप्नों को सार्थक बना सकेगा। "

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA
राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

१. नागासा की की जनता के प्रति आदर प्रकट किया जाये ।

२. जिन लोगों ने एशियायी लोगों की हितरक्षा के प्रयत्न किये हैं उनमें से ५ व्यक्ति ऐसे चुने जाये जो संघ के सम्मानित डाइरेक्टर बनें ।

३. गैर जाति के जो लोग इस संघ के उद्देश्यों से सहमत हों और उसका समर्थन करें उनके साथ सहयोग किया जायेगा ।

४. निम्नलिखित डाइरेक्टर संघ के नियुक्त हुये ।

:१: जुनतारी इमासातो

:२: शुभी आई औकाना : जापान :

:३: हुआंग कुंशा

:४: लिंग कांग यु : चीन :

:५: रास बिहारी बोस : भारत :

:६: तथा फिलीपीन प्रतिनिधि ।

सभी देशों के प्रतिनिधियों ने अपना भाव यह प्रकट किया कि संसार में शान्ति स्थापन न्याय के आधार पर हो और इसके लिये एशियायी अधिकारों की रक्षा परमावश्यक है ।

इधर मालवीय जी हिन्दू संगठन के कार्य में प्राण पण से लगे हुये थे उधर नागपुर अ० भा० कांग्रेस कमेटी के प्रस्ताव अनुसार १४ सितम्बर १६२३ को दिल्ली में विशेष कांग्रेस का अधिवेशन हुआ । मौलाना अबुल कलाम आजाद अधिवेशन के सभापति थे तथा डा० अंसारी स्वागत समिति के अध्यक्ष डा० अंसारी ने अपने स्वागत भाषण में शुद्धि और संगठन आन्दोलन को लक्ष्य कर कहा कि " आलाबार तथा मुलतान की घटनाओं से दुखित हुये हिन्दुओं ने तथा इन घटनाओं से प्रभावित हुये उत्तरदायी नेताओं ने शुद्धि और संगठन के आन्दोलन प्रारंभ किये । हाल में होने वाले दंगे इन्हीं शोक जनक घटनाओं के परिणाम है । " इसके अर्थ साफ है । हिन्दू शुद्धि और संगठन आन्दोलन बन्द करें तभी दंगे बन्द हो सकते है सभापति मौलाना आजाद ने भी शुद्धि और संगठन आन्दोलनों की निन्दा की । उन्होंने अपने भाषण में कहा : " बारडोली के निर्णय द्वारा

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA
राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

हमारा संग्राम रुक गया । उसे गहरा धक्का लगा और इस धक्के का स्वाभाविक फल यह हुआ कि हमारा कार्य रुक गया ,कांग्रेस में फूट पैदा हो गई ,हिन्दू मुसलमानों मे झगड़े बढ़ने लगे और हिन्दू मुस्लिम ऐक्य कायम रखने के सारे प्रय न असफल हुये । हमारे आन्दोलन को यह धक्का बारदोली के निर्णय के कारण पहुचा है ' इसके मानी यह हुये कि हिन्दू मुस्लिम झगड़े बढ़ने का कारण बारदोली का आन्दोलन स्थगित करने वाला महात्मा गांधी 'का निर्णय था । डाक्टर अंसारी और मौलाना आजाद की बातों को मिलाकर पढ़े तो स्थिति बिल्कुल साफ हो जाती है । बारदोली में महात्मा जी ने खिलाफत केप्रश्न पर मुख्य रूप से चलाये गये , असहयोग आन्दोलन को स्थगित कर दिया ,हिंसा के नाम पर , इस कारण हिन्दू मुस्लिम दंगें हुये । हिन्दू पिटने लगे तो उन्होने शुद्धि और संगठन का आन्दोलन बन्द करदे तभी झगड़े रुक सकते है । खैर , इस संबंध में फैसला यह हुआ कि शुद्धि आन्दोलन के संबंध में लाला सीता राम ,पं० नेकी राम शर्मा , मौलाना मुहम्मद अली ,श्री० जुल्फिकार अली का दियानी और गुरु द्वारा प्रबंधक कमेटी के एक सिख प्रतिनिधि की एक कमेटी बना दी गई । इस बात की जांच करने के लिये कि वह शुद्धि क्षेत्र मे जाकर जाच करे कि शुद्धि स्वेच्छा से हो रही है या जोर जबर्दस्ती से । संगठन आन्दोलन के संबंध मे हिन्दू मुसलमान नेताओं ने विश्वास दिलाया कि वह मुसलमानों के विरुद्ध नही ,हिन्दू जाति की अपनी कमजोरी दूर करने के लिये है । इस तरह शुद्धि तथा संगठन आन्दोलनों की न निन्दा की गई और न उनपर कोई प्रतिबन्ध ही लगाया जा सका ।

जिसकौंसिल प्रवेश के प्रश्न पर मुख्य रूप से विचार करने के लिये यह विशेष अधिवेशन बुलाया गया था उसके संबंध मे परिवर्तन वादियों की जीत हुई और कौंसिल प्रवेश की आज्ञा कांग्रेस सज्जनों को मिल गई । श्री० राय वाल्कर ने अपनी पुस्तक ' सोर्द आफ गोल्ड ' मे इस संबंध में लिखा है :

In December 1923 the Cobgress regular session was held at coconade and the last hepes of the

of the No changers " were dispelled. Mohammed Ali, who was chosen as president for the year suggested that Gandhi would not object to council entry although he had in his pocket a message from Gandhi in which the Mahatma expressed the impossibility of judging the situation but added that there had been no change in his views since he had been imprisoned. " अर्थात "दिसम्बर १९२३ में कोकोनाडा में होने वाले कांग्रेस के साधारण अधिवेशन में अपरिवर्तन वादियों की अन्तिम आशा पर भी तुषार पात होगया । उस अधिवेशन के निर्वाचित सभापति मुहम्मद अली ने इशारतन कहा कि गांधी को कौंसिल प्रवेश से विरोध नहीं है यद्यपि उनकी जेब में महात्मा का एक पत्र था जिसमें महात्मा जी ने जेल से परिस्थिति पर अपना कोई निर्णय देने की असंभाव्यता बतलाते हुये भी यह कहा था कि जेल में आने के उपरान्त से उनकी राय में कोई परिवर्तन नहीं हुआ । "

इन सब बातों से यह प्रत्यक्ष है कि बारदोली निर्णय के कारण मुसलमान नेता महात्मा जी से और अपरिवर्तन वादियों से सन्तुष्ट नहीं थे और उन्होंने परिवर्तन वादी दल का साथ दिया । खिलाफत स्वराज्य दल की जीत का यही रहस्य था । स्वराज्य दल ने भी शुद्धि संगठन आन्दोलन का जोर दार विरोध किया ।

कांग्रेस के दिल्ली विशेष अधिवेशन के समय एक और विशेष घटना घटी । दिल्ली के शहीद भवन में मौलाना आजाद ,मौ० मुहम्मद अली ,देश बन्धु दास तथा पं० मोती लाल नेहरू को अभिनन्दन पत्र भेंट किये गये दिल्ली के नागरिकों की ओर से । इस सूची में मालवीय जी का नाम नहीं था । इस सम्बन्ध में नेताओं का जुलूस निकलने वाला था । दुकान दारों से शहर को सजाने को कहा गया किन्तु हिन्दू जनता ने शहर सजाने या स्वागत में भाग लेने से साफ इन्कार कर दिया जब तक कि मालवीय जी का नाम स्वागत किये जाने वाले नेताओं में न हो । न उस सूची में मालवीय जी का नाम बढ़ाया गया और न हिन्दू जनता ने उस स्वागत समारोह में भाग ही लिया । जुलूस का विचार तो छोड़ दिया गया ।

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA
राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

कांग्रेस व्दारा कौंसिल प्रवेश पर से निषेध हटा लेने पर मालवीय जी ने भी केन्द्रीय एसेम्बली में खड़े होने का निश्चय कर लिया किन्तु स्वराज्य दल की ओर से नहीं बल्कि स्वतंत्र रूप से। उनका निर्णय प्रकट होते ही फैजाबाद डिवीजन के हिन्दुओं ने एक सभा कर उनसे फैजाबाद डिवीजन से खड़े होने की प्रार्थना की किन्तु मालवीय जी ने उसे सधन्यवाद अस्वीकार करते हुये कहा कि वे अपने पुराने स्थान इलाहाबाद फांसी डिवीजन से ही खड़े होंगे। एसेम्बली में खड़े होने के मालवीय जी के निर्णय पर प्रसिद्ध अंग्रेजी दैनिक ट्रिब्यून ने लिखा था :

" यह समाचार पाकर हमें हार्दिक हर्ष हुआ है कि मालवीय जी ने आगम्मी चुनाव में बड़ी व्यवस्थापिका सभा में खड़े होने का निश्चय कर लिया है। यह निश्चय कांग्रेस समझौते का ही फल है क्योंकि कौंसिल प्रवेश में उनका दृढ़ विश्वास होते हुये भी पिछली बार मालवीय जी कांग्रेस के निश्चय के कारण चुनाव के लिये खड़े नहीं हुये। अब बायकाट उठा लिया गया है। आशा है कि वे भारत की उस सबसे बड़ी व्यवस्थापिका सभा में बिना किसी विरोध के पहुंचेंगे। जिस सभा का देश के दुर्भाग्यवश पिछले तीन वर्षों से उनका महान व्यक्तित्व उनकी ज्वलन्त देश भक्ति, उनका स्वातंत्र्य प्रेम, अत्याचार के प्रति उनकी घृणा, उनकी प्रभावशालिनी योग्यता और शान्त सिंहनाद प्राप्त नहीं हुआ था। "

मालवीय जी चाहते थे कि व्यवस्थापिका सभाओं में सभी दलों के योग्यतम प्रतिनिधि पहुंचे उधर स्वराज्य दल वालों का कहना था कि प्रश्न व्यक्तिगत योग्यता अयोग्यता का नहीं दल का होता है और होना चाहिये। हमारा साधारण से साधारण सिपाही भी विपक्षी दल के योग्यतम व्यक्ति के मुकाबिले में श्रेष्ठ है। फल यह हुआ कि स्वराज्य दल के उम्मीदवारों के मुकाबिले में खड़े हुये तीन स्वतंत्र उम्मीदवारों का मालवीय जी ने समर्थन किया। बड़ी व्यवस्थापिका सभा के लिये खड़े हुये दो उम्मीदवार पं० हृदय नाथ जी कुंजरू और मुंशी ईश्वर शरण तथा प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभा के लिये खड़े हुये। काशी के प्रोफेसर काशी नाथ त्र्यम्बर तैलंग को उनका समर्थन प्राप्त हुआ। इधर स्वराज्य दल ने मालवीय जी

के अत्यन्त स्नेह पात्र , उनके अपने भतीजे , ' अभ्युदय ' सम्पादक पं० कृष्ण कान्त जी मालवीय को लीडर सम्पादक श्री० सी० वाई० चिन्ता मणि जी के विरुद्ध खड़ा दिया अपने टिकट पर । मालवीय जी चिन्तामणि जी की योग्यता के बड़े कायल थे । उपयुक्त तीन उम्मीद वारों की ही तरह योग्यता के नाम पर मालवीय जी चिन्ता मणि जी का समर्थन क्यों नहीं करते , क्या अपने प्रिय भतीजे के स्नेह के कारण , यह प्रश्न स्वराज्य वादी उनसे पूछ रहे थे , उन्हें बदनाम किया जा रहा था किन्तु वह चुप थे । इधर कृष्णा कान्त जी के क्षेत्र में विरोधी प्रचार यह हो रहा था कि वह मालवीय जी की अवज्ञा कर चिन्ता मणि जी के विरोध में खड़े हुये है और मालवीय जी श्री० चिन्ता मणि के समर्थक है । पर मालवीय जी कुछ बोलते ही न थे । चुनाव के एक या दो दिन पहले अलीगढ़ की एक सभा में , जिसमें वह कुंजरी जी का समर्थन करने गये थे , [illegible] किसी ने यह प्रश्न पूछ तो ही दिया । मालवीय जी को भी अपना मौन भंग करना पड़ा और उन्होंने जो उत्तर दिया वह सर्वथा उनके अनुरूप था । उन्होंने कहा कि मैं श्री० चिन्ता मणि की योग्यता का कायल हूं । और ह्रदय से चाहता था कि वह व्यवस्थापिका सभा में जाय । पहले तो खड़े होने से पहले उन्होंने मुझसे कुछ कहा था कि नहीं , कृष्ण कान्त मुझसे पूछकर खड़ा हुआ किन्तु उसके बाद भी जब चिन्ता मणि जी के पैरोकार मुझसे मिले और उन्होंने मेरा समर्थन चाहा तो मैंने उनसे कहा था कि मै चिन्ता मणि जी का समर्थन करना चाहता हूं । मेरे सामने एक ही कठिनाई थी । मुझे चिन्ता मणि जी से एक शिकायत है । असहयोग आन्दोलन के समय जब जोरों से सरकार दमन चल रहा था । चिन्ता मणि जी प्रान्तीय सरकार में मिनिस्टर बने रहे । यह सही है कि उनका विभाग दूसरा था और दमन से उनका कोई संबंध न था । किन्तु फिर भी मैं समझता हूं कि एक भारतीय के नाते उन्हें उस समय जब कि हमारे देशभाई जेलों में भरे जा रहे थे और उन पर प्रहार हो रहा था , उस दमन के विरोध में मंत्रिपद से स्तीफा दे देना चाहिये था । अन्ततोगत्वा

विभागीय मंत्री सरकार के कामों के लिये सामुहिक रूप से जिम्मेवार तो है ही । मेरी राय में चिन्ता मणि जी से यह भूल हुई और यदि अपनी इस भूल के लिये आज भी खेद प्रकाश करें तो मैं उनका समर्थन करने को तैयार हूं । उनके पैरोकारों ने मुझे आश्वासन दिया था कि वे चिन्तामणि जी से ऐसा एक वक्तव्य प्राप्त कर लेंगे । इसीलिये अब तक इस मामले में मैं चुप रहा । मैं श्री० चिन्ता मणि के वक्तव्य की बाट जोह रहा था किन्तु आज तक कोई वक्तव्य प्रकाशित नहीं हुआ । अब उसका जो समय भी नहीं रहा इसलिये आपके प्रश्न के उत्तर में मुझे यह सब कहना पड़ा यद्यपि मैं इस मामले में चुप रहना ही अधिक श्रेयस्कर समझता था । कुंजरू जी, मुंशी ईश्वर शरण और प्रोफेसर तैलंग की बात दूसरी है । यह सदैव सरकार विरोधी दल में रहे हैं और सर्वथा योग्य व्यक्ति हैं हमारे उनके विचारों में मतभेद हो सकता है किन्तु मुझे विश्वास है कि देशहित के विपरीत कोई काम यह लोग करेंगे । इत्यादि ।"

इसी एक छोटी बात से पूज्य मालवीय जी की विशाल आत्मा, उदारता और सत्य का प्रेम प्रत्यक्ष हो जाता है । लोगों को मौका मिला था और वे उन्हें बदनाम कर रहे थे किन्तु अपनी कीर्ति की रक्षा के हेतु भी दिये हुये वचन के विरुद्ध आचरण करना उन्होंने पसन्द नहीं किया । वह देख रहे थे कि एक ओर अपना ही प्राणी है और उनके चुप रहने से उसको बहुत बड़ी हानि पहुंच रही है किन्तु उसको लाभ पहुंचाने के लिये भी उन्होंने सत्य का त्याग नहीं किया । उदारता इतनी थी कि अगर श्री० चिन्तामणि जी पश्चाताप प्रकट कर देते, तो जिस तरह उन्होंने पं० कृष्ण कान्त जी को खड़े होने की आज्ञा दी थी वैसे ही वह उन्हें बैठ जाने की भी आज्ञा देते । इस छोटी सी बात में उदारता, सत्य का प्रेम और आत्मा की महत्ता ही नहीं झलक रही है इसमें एक राजनैतिक पहलू भी है और वह यह कि अगर चिन्तामणि जी पश्चाताप प्रकट कर देते, प्रजादल के नेताओं के साथ आ मिलते और उनका साथ देने पर आमादा हो जाते तो उनकी योग्यता, और विद्वता से प्रजा

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA
राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

और विद्वता से पूजा दल कहीं अधिक शक्ति शाली हो जाता। इसे कहते है राजनीति और यह है सच्चे अर्थों में देश की सेवा।

पं० कृष्ण कान्त जी को स्वराज्य दल की ओर से खड़े होने की आज्ञा देकर उन्होंने यह भी साबित कर दिया था कि राजनैतिक विचारों में अपने निकटतम से निकटतम व्यक्ति को भी पूर्ण स्वतंत्रता देने में विश्वास रखते थे। पंडित कृष्ण कान्त जी स्वराज्य दल की ओर से एसेम्बली में गये थे किन्तु हिन्दू संगठन और शुद्धि आन्दोलन को तिलांजलि कर नहीं। स्वराज्य दल में रहते हुये भी वह इन आन्दोलनों का बराबर समर्थन करते रहे। वह व स्वराज्यदल और मालवीय जी के बीच की कड़ी थे।

इस चुनाव में स्वराज्य दल की भारी विजय हुई। बंगाल और मध्य प्रान्त में स्वराज्य दल का एकान्त बहुमत हो गया और इन प्रान्तों में मंत्रि मंडल नहीं बन सके। गवर्नर को विधान स्थगित कर प्रान्त का शासन अपने हाथों में लेना पड़ा। गवर्नर और भी स्वतंत्र हो गये। और बंगाल में विजय प्राप्त करने के लिये स्वराज्य वादियों को भारी मूल चुकाना पड़ा। वहां के मुसलमानों के साथ स्वराज्य दल को एक समझौता करना पड़ा जिसे "बंगाल पैक्ट" के नाम से पुकारा जाता है। इस पैक्ट के अनुसार मुसलमानों की यह मांग स्वीकार कर ली गई कि मस्जिदों के सामने बाजा न बजाया जाय। एक शर्त के अनुसार कि धार्मिक कृत्यों के अवसर पर मुसलमानों को गौ हत्या करने का अधिकार है और व्यवस्थापिका सभा में कोई कानून इस तरह नहीं बना सकती जिसके अनुसार गौ हत्या बन्द की जा सके। सरकारी नौकरियों में योग्यता अयोग्यता का ख्याल किये बिना ५१ फी सदी नौकरी मुसलमानों को देने का निश्चय किया गया। सारे बंगाल में एक तहलका मच गया। हिन्दुओं ने जोरों से इस पैक्ट का विरोध किया। इस पैक्ट स्वीकृति के लिये कोकोनाडा कांग्रेस में पेश किया गया था और अस्वीकृत हुआ। मालवीय जी कोकोनाडा कांग्रेस में सम्मिलित नहीं हो सके थे अपनी अस्वस्थता के कारण किन्तु उन्होंने एक सन्देश भेजकर कांग्रेस के इस अधिवेशन में इस पैक्ट पर कोई अन्तिम निर्णय न करने की प्रार्थना की थी। स्वराज्य वादी नहीं माने और प्रस्ताव गिर गया।

राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India